साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 50, दिसम्बर(प्रथम) , 2018

मनुष्य में रही सम्भावना का शिल्प ही जीने की कला का इशारा है

लेखक: पद्मश्री डॉ.गुणवंतभाई शाह
अनुवाद: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

संबोधि को पाने की राह पर जो चल पड़ा है और जन्म-प्रतिजन्म वहाँ पहुँचने के लिए जूझनेवाला (बौद्ध) साधु `बोधिसत्त्व' कहलाता है।
समझदार व्यक्ति के लिए तो ऐसी सम्भावना के संकेत भी पर्याप्त हैं।

हर तूम्बा वीणा नहीं बन सकता। यह सच होते हुए भी ऐसा होने की सम्भावना हमेशा रहती ही है। कार में ड्रायवर की नजर अंकचक्र(डायल) पर गतिदर्शक अंक पर रहती है। मोटरगाड़ी की सही रफ्तार 150 किलोमीटर के अंक तक कभी पहुँचती नहीं है,परंतु वह अंक कार में रही सम्भावना का अंदाजा तो देता ही है। हर वृक्ष बोधिवृक्ष नहीं होता और हर व्यक्ति बोधिसत्व भी नहीं होता, परंतु जीवन की दिशा की समझ रहे तो भी गनीमत!

बोधिसत्व किसे कहें? जो संबोधि को पाने की राह पर चल पड़ा है और कुछ जन्मों के बाद वहाँ पहुँचने के लिए जूझनेवाला (बौद्ध) साधु `बोधिसत्त्व' कहलाता है। समझदार व्यक्ति के लिए तो ऐसी सम्भावना के संकेत भी पर्याप्त हैं। प्रत्येक हाथी `गजेन्द्र' नहीं होता,परंतु भक्तकवि सूरदासजी द्वारा रचित सुंदर भक्तिकाव्य `गजेन्द्रमोक्ष' उस सम्भावना का अनन्य काव्य है।

सूरदास कहते हैं:
`श्याम सुनो,शरण हैं तिहारे,
अबकी बार पार लगा दो,नन्द के दुलारे!!

वह(गजेन्द्र) था चार पैरोंवाला विशालकाय हाथी, पर उसका जीवन खत्म होने के कगार पार था, तब उसका कृष्णभाव जागृत हुआ और हाथी मोक्ष को प्राप्त हुआ। उस गजेन्द्र में पड़ी हुई सम्भावना के उदय के लिए मृत्यु का भय निमित्त हुआ।

रूसी कवि मिझेलाइट्स की कैफियत सुनने योग्य है। कविता सामने चलकर अनुनयपूर्वक आ पहुंचे तब क्या होता है? `जब तक प्रबल जरूरत पैदा नहीं होती तब तक मैं कभी लिखता नहीं। कविता को मैं अपने भीतर किसी रोग की भांति ले जाता हूँ। शरीर का तापमान ऊपर चढ़ने लगता है। कुछ क्षणों के लिए कविता मुझे परेशान कर देती है,पर बाद में तापमान सहज हो जाता है। कविता सृजित हो जाने के बाद मैं पुन: स्वस्थ हो जाता हूँ। कविता में जितनी गहराई ज्यादा उतना ही बुखार ज्यादा और रोग भी उतना ही भारी!'

आजकल मैं कुछ पंक्तियों के प्रेम में पागल हूँ। प्रोफे.गायत्री भट्ट की जीवंत पंक्तियों में जो बुखार प्रकट हुआ है,वह मनभावन और हृदय लुभानेवाला है। सुनिए:

भगवा भाषा भीतर खोले
मेरे अंदर मीरा बोले!
भीतरी भेदों को भेदकर
हौले दिल जग को तौले
रागविराग से तार मिलाये
भीतर मेरे श्याम ही डोले
भगवा भाषा भीतर खोले
मेरे अंदर मीरा बोले!

(काव्य संग्रह :`मेरा अंजान कोना:' गायत्री भट्ट')

दो प्रेमीजन अनेक जोखिम उठाकर भी एक-दूसरे से मिलने के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे जोखिम के क्षणों के दौरान वे दोनों पूरी मात्रा में जीते हैं। उनकी `निंदनीय' हरकतों को अपने चश्मे से देखनेवाली प्रजा उन दोनों जैसी जीवंत नहीं होती। अत: उनको तंग करने के लिए दौड़ जाती है।

वह प्रजा मानों उन दोनों पागल प्रेमियों से कहती है: ` हमारे से अधिक मात्रा में जीवन में रही सम्भावना का `प्रेमोपनिषद' पाने का अधिकार आपको किसने दिया? हम तुम्हें सुख से प्रेमसरि में स्नान नहीं करने देंगे। संभल जाओ,सुधर जाओ,वरना.....'

मीरा एकबार वृन्दावन गई हुई थी। वहाँ एक संन्यासी रहते थे। मीरा ने उस संन्यासी के दर्शन करने की इच्छा दिखायी। शिष्यों ने कहा: `गुरुजी स्त्रियॉ को दर्शन नहीं देते।' मीरा ने अपने उत्तर में जो कहा, उसे सुनिये।:

मैं तो जानती थी,जिस व्रज में पुरूष है एक,

व्रज में बसकर आप पुरूष रहे,
उसमें भला आपका विवेक!

शिष्यों ने जाकर गुरुजी को ये पंक्तियाँ सुनायी और गुरुजी ने दर्शन देने के लिए तत्परता दिखायी! प्रश्न पूछने लायक है: `किसने किसे दर्शन दिये???'

कृष्ण के साथ मीरा की भांति एकरूप होना सरल नहीं है। वैसे तो कृपण व्यक्ति भी चिल्लर गिनते वक्त तल्लीन(तद्लीन) हो जाता है। जीवन में चिल्लर और पुरुषोत्तम के बीच सतत ऐंचातानी चलती रहती है और महदांश चिल्लर ही जीत जाता है। जीवन में सदैव बिना कृष्ण के ही रासलीला चलती रहती है। आँधी और भूकंप का एपिसेंन्टर तो मिल जाता है परंतु महदांश जीवन का केंद्र मिलता नहीं है। रासलीला चलती रहती है। उम्र और तनख्वाह अविरत बढ़ती रहती है। टेकसी का मीटर चढ़ता ही रहता है। टेकसी चल भी नहीं रही हो तब भी `वेइटिंग चार्ज' तो चढ़ता ही रहता है! नगर की बेचैन सडकों पर हॉर्न तो सदैव भौंकते ही रहते हैं। भीड़ में से मार्ग निकालने के लिए रिक्शेवाला रिक्शे का अगला पहिया दाखिल हो जाए तब समूची रिक्शा निकाल जाएगी ऐसे विश्वास के साथ लोगों के हिसाब से और जोखिम पर मौज से रिक्शा दौडाता रहता है।

छोटे थे तब चार्ल्समैक की अंग्रेज़ी कविता पढ़ी थी। उसका शीर्षक था: `मिलर ऑफ धी डी।' वह मस्त चक्कीवाला `डी' नामक नदी के तट पर रहता था। अनाज पीसने की चक्की चलानेवाला वह सुखी व्यक्ति अपनी सादा समझ को प्रकट करता है: `मैं किसीकी ईर्षा नहीं करता और कोई मेरी ईर्षा करता नहीं है।' सुख का रहस्य उस चक्कीवाले के मुख से सहज ही व्यक्त हो जाता है। वह कविता अभी भी याद है।

`गजेन्द्रमोक्ष' उस सम्भावना का अनन्य काव्य है।

सूर कहे श्याम सुनो,शरण हैं तिहारे,
अबकी बार पार लगा दो,नन्द के दुलारे!!

परिणाम

फ्रांस के क्रांतिवीर वोल्टर से
किसीने पूछा: `मनुष्य को नाक क्यों दी गई है?'
वोल्टर ने जवाब देते हुए कहा: `चश्मे बैठे रह जाए इसलिए।'
- नाक में रही सम्भावना खत्म!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें